International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 189-199

राजनीति, एवं मतदान व्यवहार के प्रति महिलाओं की उदासीनता के कारणों का अध्ययन (ग्रामीण एवं शहरी महिला मतदाताओं पर किया गया एक तुलनात्मक अध्ययन)

डॉ. सुमन सिंह*

सार

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मतदान करने वाला या न करने वाला सभी छोटे से बड़ा व्यक्ति लोकतान्त्रिक प्रणाली का हिस्सा है भारत एक लाकतान्त्रिक देश है जहाँ गाँव से लेकर शहर तक के लोग देश की सरकार के लिए मतदान करते हैं। इसमें ऊच नीच, अमीर गरीब महिला पुरूष का कोई भेद नहीं है। देश के सभी नागरिक का एक समान अधिकार है। इस कारण प्रत्येक मतदाता को अपने मत का महत्व समझना चाहिए। मतदाता लोकतन्त्र की रीढ़ होती है प्रशासन सुदृढ़ बने, चुनी हुई सरकार जनता के हितों के लिए कार्य करे। यह तभी सम्भव है जब देश के शत प्रतिशत मतदाता करे। अब तक यह माना जाता रहा कि आधी आबादी की भागीदारी उतनी नहीं है जितनी होनी चाहिए। लोकसभा चुनाव 2014 में ग्रामीण व शहरी महिलाओं की भागीदारी ने एक नई गाथा लिखी व बता दिया कि महिलायें किसी भी पार्टी के भाग्य का फैसला कर सकती हैं। अतः ग्रामीण व शहरी महिलाओं पर नजर तो सबकी रहती है जो चुनाव में राजनीति में आती हैं चुनाव लड़ती हैं ,नेता बनती हैं जो भीड़ से निकलकर अलग मुख्य भूमिका में आ चुकी है। परन्तु महिलाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग है जो किसी भी (प्रत्याशी) को मतदान की भूमिका निभाकर प्रमुख भूमिका में खड़ा करता है। उन आम महिलाओं को अनदेखा किया जाता है जबकि कहा जाता है इमारत की खूबसूरती बनाने वाले से होती है। अतः इस अध्ययन में ग्रामीण व शहरी महिलाओं पर एक तुलनात्मक अध्ययन करके महिलाओं की राजनैतिक व मतदान व्यवहार के प्रति उदासीनता के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है।यह अध्ययन वाराणसी जिले के 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र की महिला मतदाताओं पर किया गया है। क्षेत्र चयन के अन्तर्गत सर्वप्रथम. भारत एक सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। एवं इसमें मतदाताओं की संख्या सबसे अधिक है। इसलिये भारत देश के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में स्थित वाराणसी जिले का चयन वाराणसी जिले का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन में कुल मिलाकर 8 क्षेत्रों 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया है 8 क्षेत्रों से कुल 400 प्रतिदर्श के आकार का चयन किया गया है जिसमें 217 ग्रामीण व 183 शहरी क्षेत्र से लिये गये है प्रतिदर्श के आकार का चयन यामिन्स सूत्र से किया गया है आँकड़ा संग्रह एंव साक्षात्कार, यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन के परिणाम में यह पाया गया कि, मतदान सम्बन्धित व्यवहार एवं राजनीतिक क्षेत्र सम्बन्धित कार्यों के प्रति गहरी उदासीनता है। 99.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार का, या परिवार के किसी भी सदस्य का प्रत्यक्ष राजनीतिक जुड़ाव नहीं है उदासीनता अरूचि असहभागिता अधिक व्याप्त है। 79.2 प्रतिशत ने कहा कि राजनैतिक गिरावट बहुत आ गई है। राजनीतिज्ञ केवल अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति में लगे है। मूल उददेश्य जन सेवा भाव, भूल गये हैं।

शब्दकोशः *जागरूकता, भागीदारी, महिला, मतदाता, लोकतन्त्र, सहभागिता, राजनैतिक उतरदात्रियां।*

प्रस्तावना

राजनीति का आधार, भारत में चुनाव न सिर्फ चुनाव होता है बल्कि यह एक महा अनुष्ठान होता है। जब भी यह माहौल आता है राष्ट्र की सम्पूर्ण जनसंख्या चुनाव के रंग में रंग जाती है। विश्व के बड़े–बड़े देशों

* सहायक आचार्या, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

और अति महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की दृष्टि भी भारतीय राजनीति एव चुनाव प्रक्रिया पर ही रहती है। यह सर्वविदित है कि लोकतन्त्र एक वृक्ष है और स्वतन्त्रता इसकी छाया, एंव निर्वाचन इस भी वृक्ष के सींचने वाले जल के समान है। परन्तु जैसा परिणाम होना चाहिए। वैसा नहीं पाया जाता है।10 वी लोकसभा चुनाव मध्यवधि के चुनाव ये क्योंकि पिछली लोकसभा को सरकार के गठन के केवल 16 महीने बाद भंग कर दिया था इस बार के संसदीय चुनावों में अब तक सबसे कम मतदान हुये इसमें केवल 53 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकर का प्रयोग किया सरकार की अवधरणा की एक बार पुनः अग्नि परीक्षा हुई चुनाव के दौरान न तो कोई लहर थी और न ही मतदाताओं में कोई स्पष्ट व सकारात्मक रूझान दृष्टिगोचर हुआ ग्रामीण व नगरीय महिलाओं की भूमिका मतदात्रियों के रूप में केवल बारह करोड 14 लाख 53 हजार आठ सौ उन्नीस थी, एवं महिला सदस्यों के रूप में 39 ही थी। 11वी लोकसभा चुनाव परिणामों से एक बार फिर त्रिशंकु संसद बनी और 2 वर्ष तक राजनीतिक अस्थिरता रही जिसके दौरान देश के 3 प्रधानमंत्री बनें। वाजपेयी ने 16 मई को पदभार सम्भाला और संसद ने क्षेत्रीय दलों से समर्थन पाने की कोशिश की वे इस काम में विफल रहें और 13 दिनों के बाद उन्होनें इस्तीफा दे दिया। 1996 के बाद लोक सभा व विधान सभा चुनावों में मतदाताओं का व्यवहार उदासीनता और उपेक्षा का रहा है महिलायें राजनीतिक मे पीछे हैं तो इसके जिम्मेदार पुरूषों की सामन्तवादी मानसिकता है वैसे तो महिलाअयें प्रत्येक क्षेत्र मे पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है परन्तु, राजनैातिक, मतदान के क्षेत्र में वे अभी बहुत पीछे है उनका रवैया अत्यन्त उदासीन है कुछ सीमा तक उनकी सहभागिता है कुछ महिलायें है चुनकर सामने आती है। मतदात्रियों के रूप मे वे पुरूषों की सोच पर आधरित मतदान करती है। उन्हें यह समझ कम है कि इस क्षेत्र में भी स्वंय से निर्णय ले। आज भी अधिंकाश महिलाओं में यह सोच पनपती है कि अरे, राजनीति से हमारा क्या लेना देना उन्हें यह ज्ञान नहीं है कि प्रत्येक विकास की दिशा, निर्णय सब राजनीति के गलियारे से ही होकर गुजरता है। इसी सोच के कारण महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए पंचायत तथा अन्य राजनैतिकि क्षेत्र में आरक्षण व महिला सीटों की व्यवस्था की गई है। जिससे उन्हें एक अवसर मिले एंव वे अपनी इस शक्ति क्षमता का भी पहचान सकें, आगे आ सकें।

वर्तमान परिदृश्य

भारत में लोकतन्त्र एक जीवन दर्शन है। वर्ष 2018 में इग्लैण्ड में महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया गया, यही काम 2 वर्ष बाद 26 अगस्त 1920 को अमेरिका मे किया गया जब हम अपने समाज को देखते है तो हम पाते है कि हमारे समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग है जो महिलाओ का है, जो निश्चित रूप से सामाजिक आर्थिक राजनैतिक दृष्टि से पिछडा हुआ है इनके लिए विकास के और भी कदम उठाये जाने की आवश्यकता है अधिकांश महिलाओं की अपनी व्यक्तिगत न तो कोई इच्छा होती है न कोई राजनैतिक पंसद राजनैतिक जागरूकता की कमी व इसके प्रति उदासीनता भी महिलाओं की प्रगति के आड़े आती है जिस कारण उनकी राजनैतिक भागीदारी आज भी मात्र स्वप्न बन कर ही रह गया है जिसके अनेकानेक मजबूत कारण हैं। समूहों दलों को एक दूसरे से लड़ाने की राजनीति ने आम लोगों की संवेदनहीनता उदासीनता को बढ़ा दिया है राजनीति में मतदान लोकतन्त्र की बुनियाद होती है। इसमें खलल से लोकतन्त्र का आधार खिसकने लगता है। राजनैतिक दल साम–दाम–दंड भेद अपनाकर मत तो प्राप्त करना चाहते हैं परन्तु मतदान के बाद उनमें शुचिता समाप्त हो जाती है यही सबसे प्रमुख कारण है राजनैतिक उदासीनता एंव असहभागिता का जो एक बड़ा प्रश्न चिन्ह खडा करती है।

हालांकि बदलते समय के साथ इस राजनैतिक जागरूकता एवं महिलाओं की सहभागिता में वृद्धि हो रही है। परन्तु मतदान में यह स्पष्ट है कि महिलायें अपने परिवार एंव समाज को ध्यान में रखकर मतदान करती है।समय के अनुसार परिवर्तन मतदात्रियों में तो रहा है परन्तु मतदान के बाद उनकी कार्यप्रणाली एंव वादों में काफी अन्तर पाया जाता है जो विश्वनीयता तो बिलकुल भी नहीं बना पाते हैं जनता का विश्वास हासिल करने में पूर्णतयाः नाकाम रहते हैं मतदान के समय बहुत ही उत्साह से लोग सहभाग करते है अपने ही घर में उदासीनता के बेडियों में जकड़े अपने बुजुर्गों को बूथ तक पहुँचाते है मगर मतदान पश्चात उम्मीदवारों के बदले

व्यवहार जनता की उम्मीदों एवं उत्साह को धराशयी कर देते है 16 वीं लोकसभा चुनाव में तो युवा बेटियों में सकरात्मक सोच रही जिसने अपने ही घर में लोगों को प्रेरित किया इन बेटियों के शानदार कर्तव्य पालन पर यह पंक्ति कहना उचित होगा कि –

तू अगर बेटियाँ नहीं लिखता

तो समझ खिड़किया नहीं लिखता

अतः इस शोध के माध्यम से महिलाओं की राजनैतिक उदासीनता एंव मतदान के प्रति उदासीनता के कारणों के बारे में जाना गया है इस विषय से सम्बन्धित अध्ययनों में पाया गया कि डॉ सिंह 2017 के अनुसार – देश में मतदान का प्रतिशत कम होने के सम्बन्ध में तरह तरह की अटकलें लगाई जाती हैं, खासतौर पर बड़े शहरों में ऐसी स्थिति पर चर्चाएँ होती है, पर अभी तक मतदान करने के प्रति उदासीनता का ठीक–ठीक पता नहीं लगाया जा सकता है, मतदान के कम प्रतिशत संभावित वजह यह मानी जाती है कि लोगों की राजनीति में रूचि कम है जिसकी वजह से वे मतदान प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बनते निश्चित रूप से ऐसे कई मतदाता वर्ग हैं जिनकी राजनीति व चुनाव में कोई रूचि नहीं है। इसके अलावा पहचान पत्र का न होना, नियोक्ता द्वारा मतदान के लिए दुख न करे मिलना जिस कारण जनता वोट नहीं दे पाती। जितने निचले स्तर के चुनाव होते हैं। उनमें अधिकतम मतदान देखने को मिलता है।

उद्देश्य

- मतदाताओं की समाजिक आर्थिक एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमि का अध्ययन।
- ग्रामीण व शहरी महिलाओं की राजनैतिक व मतदान व्यवहार के प्रति उदासीनता के कारणों का अध्ययन।

शोध प्रश्न Research Question

- क्या मतदान के प्रति ग्रमीण महिलाओं में जागरूकता आई हैं?
- क्या शहरी महिलाओं में जागरूकता ग्रमीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक है?
- क्या शहरी महिलाएॅ मतदान में अधिक बढ़–चढ़ कर सहभागिता देती हैं?
- क्या पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में समय में मतदान,राजनैतिक सहभागिता राजनैतिक जागरूकता के क्षेत्र में महिलाओं की सकियता बढी़ है?
- पूर्व की अपेक्षा आज की चुनावी प्रकिया में प्रचार–प्रसार के तरीको मे परिर्वतन आया है?
- क्या लोकतंत्र के गठन एवं मतदान में भूमिका बढी है व चुनावी व्यवहार में परिर्वतन आया है?
- क्या वर्तमान समय में वोट देने के प्रति, वोट देने के कारणो के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोण बदला है?

शोध की आवश्यकता – (Need of the Study)

- यह शोध भविष्य में होने वाले मतदान के प्रति पथ प्रदर्शक की भूमिका निभायेगा। मतदान के प्रति सहभागिता को बढायेगा कान्तिकारी परिणाम के कारणो को प्रस्तुत करेगा। जिससे भविष्य में चुनाव प्रकिया जनता के व्यवहार ग्रामीण शहरी महिला मतदाताओ के व्यवहार में अंन्तर चुनाव कार्य–प्रणाली प्रचार–प्रसार में मदद मिलेगी और जागरूकता लाने तथा लोकतान्त्रिक प्रणाली को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।
- इस शोध से यह प्रयास सुनिश्चित होगा कि वोट के लिए व्यक्ति को किस प्रकार से कटिबद्ध होना चाहिए जिसका उसके मानसिक विमुखता एवं विविध प्रकार के समसायिक परिर्वतन का प्रकार है।
- पिछले चुनाव में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की सहभागिता के आधार पर अग्रिम चुनावी रणनीति तैयार करनें में सहयोग करेगा।

- चुनावी प्रकिया में प्रचार–प्रसार माध्यमो सोशल मिडिया व टडिशनल मिडिया की सहभागिता के बारे मे बतायेगा इससे यह पता चलेगा की महिला मतदाता की जागरूकता में कौन कौन से माध्यम सहायक होते हैं। किन किन माध्यमो का प्रयोग करना चाहिए।
- लोकतन्त्र कार्यप्रणाली के बारे में जनता के दृष्टिकोण एवं विचारो का पता चलेगा एवम आधी आबादी की सहभागिता सुनिश्चित करेगा।

शोध विधि

- **क्षेत्र का चुनाव :–** शोध विधि की प्रक्रिया में सर्वप्रथम क्षेत्र के चुनाव के अन्तर्गत भारत के उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के अन्तर्गत 2 विधानसभा रोहनियाँ एंव वाराणसी दक्षिणी क्षेत्रों में से कुल 8 क्षेत्र 4 शहरी एंव 4 ग्रामीण क्षेत्र क्रमशः मनोरथपुर जफराबाद, नरइचा, कादीपुर, मछोदरी, शकरकंन्द गली टीकमणी रमाकान्त सेवा संस्थान क्षेत्र का चयन उददेश्य परक विधि से किया गया है।
- **उत्तरदाताओं की चयन विधि :–** चयनित कुल 8 क्षेत्रों मे से कुल महिला मतदाताओं मे से आनुपातिक विधि द्वारा कुल 400 महिला उत्तरदात्रियों का चयन किया गया है। जिसमें 18 वर्ष व उससे अधिक आयु वर्ग के सभी उत्त्रदात्रियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।
- **आँकड़ा संकलन पद्धति**
  - **आँकडा सकंलन के प्राथमिक स्रोत्र :–** प्राथमिक आँकडों के संकलन हेतु प्रश्नावली अनुसूची एंव साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। उपकरणों के अन्तर्गत बी.जी.प्रसाद मापनी, लिकर्ट मापनी, एव टी–परीक्षण आदि का प्रयोग किया गया है
  - **आँकड़ा संकलन के द्वितीयक स्त्रोंत :–** इसके अन्तर्गत लोकसभा चुनाव से सम्बन्धित जिसमें महिलाओं की भागीदारी सम्बन्धित दस्तावेज़, विकास भवन, केन्द्रीय ग्रंथालय पुस्तक अखबार पत्र–पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गया है।
- **आँकडों का विश्लेषण :–** आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आवश्यकतानुसार उचित उपकरणों व तकनीकि का प्रयोग किया गया है। जैसे –माध्य, मध्यमान, माध्यिका, प्रतिशत सारणी, परीक्षण मापनी आँकडों के विश्लेषण को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के लिए तालिका सारणी, पाईचित्र, रेखाचित्र बार डायग्राम आदि का प्रयोग किया गया है।
- **परिणाम एंव परिचर्चाः–** ग्रामीण एंव शहरी महिलाओं के मतदान व्यवहार एंव राजनीतिक भूमिका के प्रति उदासीनता के अन्तर को जानने के लिए इसका तुलनात्मक अध्ययन वाराणसी जिले के रोहनियां एंव वाराणसी दक्षिणी विधानसभा क्षेत्रों के मनोरथपुर, नरइचा, जफराबाद कादीपुर, मनोरथपुर, मछोदरी, कमलगड़हा, शकरकद–गली, रमाकान्त सेवा संस्थान क्षेत्र संस्थान क्षेत्र में सर्वेक्षण व अध्ययन के पश्चात परिणाम एंव परिचर्चा अग्रलिखित हैं।

सारणी 1

किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ाव		सं.	प्रतिशत
1.	हाँ	4	1.0
2.	नहीं	396	99.0
	योग	400	100.0

परिवार के कोई भी सदस्य के किसी राजनीतिक दल से जुड़ाव के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण –

सारणी 1 यह सारणी उत्तरदात्रियों के परिवार के सदस्यों का किसी भी राजनीतिक दल से जुड़ा होना एंव जुड़े न होना दर्शाता है जिसमें यह पाया गया कि कुल चुने हुये उत्तरदात्रियों में से 99.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार का किसी भी राजनीतिक पार्टी से जुड़ाव नहीं है। मात्र 1.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के

परिवार का कोई सदस्य समाजवादी पार्टी से जुड़ा है, जो साधरण सदस्य के रूप में कार्यरत था। 400 उत्तरदात्रियों में से केवल 4 उत्तरदात्रियों के परविार का कोई सदस्य राजनीति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। जिनमें पुरूष सदस्य 3 है। 400 में से मात्र 1 महिला किसी राजनीतिक दल में थी । वह सपा पार्टी से जुड़ी थी। अतः बीते दौर में सपा पार्टी द्वारा महिलाओं को वरीयता दी गई। उन्हें राजनीतिक सहभगिता का अवसर प्रदान किया। अन्य पार्टियों ने महिलाओं को अधिक तवज्जों नहीं दिया है।

सारणी 2ः परिवार के कोई भी सदस्य के किसी राजनीतिक दल से जुड़ाव के कारण के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

जुड़ाव न होने के कारण		सं.	प्रतिशत
1.	राजनीतिक रूचि न होना	36	9.1
2.	राजनीतिक पृष्ठभूमि न होना	16	4.0
3.	कार्यव्यस्तता के कारण राजनीति हेतु समय का अभाव	261	66.0
4.	1़2	02	0.5
5.	1़3	31	7.8
6.	2़3	04	1.0
7.	1़2़3	46	11.6
	योग	396	100.0

सारणी 2 इस सारणी में यह दर्शाया गया है कि 99 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के परिवार के किसी भी सदस्य के किसी राजनीतिक दल से न जुड़े होने का क्या कारण है, जिसमें यह पाया गया कि 9.1 प्रतिशत सदस्यों की राजनीतिक रूचि नहीं थी, 4.0 प्रतिशत सदस्यो की राजनैतिक पृष्ठभूमि नहीं थी, सर्वाधिक 66.0 प्रतिशत सदस्यों के पास स्वयं के कार्य व्यस्तता के कारण समय नहीं था, 0.5 प्रतिशत सदस्यों की राजनीतिक रूचि एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। 7.8 प्रतिशत सदस्यों के पास राजनीतिक एवं समय का अभाव था, 1.0 प्रतिशत सदस्यों के पास राजनीतिक रूचि, राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं समय का अभाव था, ये प्रमुख कारण पाये गये जिसमें उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य राजनीतिक पार्टी से नहीं जुड़े थे। उत्तरदात्रियों में कार्यव्यस्तता अधिक पाई गई, जिस कारण राजनीति के लिए समय नहीं, लेकिन राजनीति एंव देश की राजनीति दशा–दिशा कार्यो पर नजर एवं रूचि जरूर है।

सारणी 3ः वर्तमान समय में राजनीतिक मूल्यों में गिरावट आने के प्रति उत्तरदात्रियों के विचारों नगरीय एवं ग्रामीण स्थान के आधार पर वर्गीकरण

		निवास स्थान					
राजनीतिक मूल्यों में गिरावट		नगरीय		ग्रामीण		योग	
1.	हाँ	145	79.2	133	61.3	278	69.5
2.	नहीं	38	20.8	84	38.7	122	30.5
योग		183	100.0	217	100.0	400	100.0

$X^2=15.08$, df 1, $P \leq 0.001$

सारणी 3ः उपर्युक्त सारणी वर्तमान समय में राजनीतिक मूल्यों में गिरावट के प्रति उत्तरदात्रियों के विचारों को दर्शाती है। जिसमें यह पता चलता है कि कुल चयनित उत्तरदात्रियों में से 69.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि वर्तमान समय में राजनीतिक मूल्यों में गिरावट आई है तथा 30.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि राजनीतिक मूल्यों में गिरावट नहीं आई है।

नगरीय तथा ग्रामीण उत्तरदात्रियों के आधार पर पाया गया कि 79.2 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियों के अनुसार गिरावट आई है एवं 20.8 प्रतिशत के अनुसर राजनीतिक मूल्यों में गिरावट नहीं आई है 38.7 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदात्रियों का कहना है कि वर्तमान समय में राजनीतिक मूल्यों में गिरावट नहीं आई है। लोक सभा चुनाव 2014 में जिस प्रकार महिलाओं को यह उम्मीद थी कि नैतिक दशा में सुधार होगा, परन्तु सर्वेक्षण एवं

उत्तरदात्रियों से वार्तालाप में यह पता चला कि राजनीतिक दशा में अभी कोई सुधार नहीं हुआ है। बल्कि गिरावट ही आई है, आज राजनीति में भ्रष्टाचार बढ़ा है। राजनीति में दबगों का ही वर्चस्व है।

जब से अपना देश बना है यही सिलसिला जारी है

लूट सको तो लूट लो यारों सभी माल सरकारी है।

परन्तु अपेक्षाकृत नगरीय उत्तरदात्रियों के 38.7 प्रतिशत उत्तरदात्रियों यह भी बताया की गिरावट नहीं आई है, थोड़ा सुधर हो रहा है।

सारणी 4: राजनीतिक मूल्यों में गिरावट के विभिन्न कारणों के आधार पर उत्तरदात्रियों के विचारों का वर्गीकरण

कारण		हाँ		नहीं		योग	
1.	भ्रष्टाचार अपराध जातिवाद	226	81.3	52	18.7	278	100.0
2.	राजनीति अपने उद्देश्य से भटक गई है।	230	82.7	48	17.3	278	100.0
3.	राजनीतिज्ञ अति महत्त्वाकांक्षी हो रहे हैं।	218	78.0	60	21.6	278	100.0

सारणी 4 यह दर्शाती है कि वर्तमान समय में राजनीतिक मूल्यों में गिरावट आने का कारण क्या है, जिसमें यह पाया गया कि, 81.3 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ भ्रष्टाचार, अपराध, जातिवाद को गिरावट का कारण मानती हैं। कि राजनेता अतिमहत्वाकांक्षी हो गये है जिससे राजनीति क्षेत्र से जनता का विश्वास उठ जाता है और राजनीतिक मूल्यों में आम धारणा है कि राजनीति में दबंग, उच्च व अमीर वर्ग का ही वर्चस्व रहता है। राजनीति के क्षेत्र में बहुत भ्रष्टाचार व्याप्त है। राजनेताओं की कार्य प्रक्रिया से मतदाताओं में रोष है, उनका मानना है कि केवल वोट के समय ही वे दिखते हैं, उसके बाद अपना ही भला करते रहते हैं। आज की राजनीतिज्ञ जनता की सेवा भाव से राजनीति में नहीं आते, व्यक्तिगत स्वार्थ ही उन्हें इस क्षेत्र में खींच लाता है। राजनीति अपना मूल उद्देश्य भूल गई है। राजनीतिज्ञ केवल अपनी महत्वाक़ांक्षा की पूर्ति में लगे रहते हैं।

सारणी 5: उत्तरदात्रियों के ग्रामीण एंव नगरीय स्थान के अनुसार राजनीतिक मूल्यों में गिरावट के कारणों के प्रति उनके विचारों का वर्गीकरण

निवास स्थान									
	विभिन्न कारण	नगरीय (145)		ग्रामीण (133)		योग (278)			
1	भ्रष्टाचार अपराध	103	71.0	123	90.5	226	81.3	20.98	< 0.001
2	जतिवाद उद्देश्य से भटकना	104	71.7	126	94.7	230	81.7	25.72	< 0.001
3	अति महत्वाकांक्षा	96	66.2	122	91.7	218	78.4	26.70	< 0.001

ग्रामीण तथा नगरीय उत्तरदात्रियों के आधार पर 71.0 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियां भ्रष्टाचार, अपराध, जातिवाद को राजनैतिक गिरावट का कारण मानती हैं। 71.7 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि राजनीति अपने उद्देश्य से भटक गई है एवं 66.2 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियों का कहना है कि राजनीतिज्ञ अति महत्वाकांक्षी हो गये है।

तथा 90.5 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदात्रियां भ्रष्टाचार, जातिवाद, अपराध को राजनीतिक गिरावट का कारण मानती हैं। 94.7 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदत्रियां राजनीतिज्ञों का उद्देश्य से भटकने को राजनैतिक गिरावट का कारण मानती हैं तथा 78.4 प्रतिशत उत्तरदत्रियां राजनीतिज्ञों की अतिमहत्वाकांक्षा को राजनैतिक गिरावट का प्रमुख कारण मानती हैं। इन कारणों से प्रत्याशी राजनीतिज्ञ जनता के ह्रदय से दूर एंव स्वार्थपरक हुये है। आजादी के बाद से दिन प्रतिदिन राजनैतिक दशा में गिरावट आई है।

सारणी 6ः राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों हेतु शिक्षित होने की आवश्यकता के प्रति उत्तरदात्रियों के विचारों का वर्गीकरण

	शिक्षित होने की आवश्यकता	सं.	प्रतिशत
1.	हाँ	396	99.0
2.	नही	4	1.0
	योग	400	100.0

सारणी 6 राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों के लिये शिक्षा की आवश्यकता को दर्शाती है। प्रायः आज तक राजनीति में सक्रिय एवं पदार्पण करने वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षा की न तो आवश्यकता समझी गयी और न ही कोई शैक्षिक योग्यता निर्धारित की गई है। परन्तु आज के इस वैज्ञानिक युग ,21वीं सदी ,नारी युग में राजनीति तथा राजनीतिज्ञों एवं जनता की दशा दिशा पूरी तरह बदल गयी है।इसमें यह पाया गया कि 99 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का यह मानना है कि राजनीति में व्यक्तियों के लिए शिक्षित होना आवश्यक है, 1.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का कहना है कि शिक्षा की कोई आवश्कता नहीं है। प्रारम्भिक समय में शिक्षा का कम से कम प्राथमिक, माध्यमिक हाईस्कूल अथवा इण्टर तक की शिक्षा ही अनिवार्य मानी जाती थी। परन्तु आज कम से कम बी0ए0 तक की शिक्षा तो होनी ही चाहिए।

सारणी 7ः ग्रामीण एवं नगरीय आधार पर राजनीतिक दल के प्राथमिकता प्रदान करने के प्रति उत्तरदात्रियों के विचारों का वर्गीकरण

स्थायी निवास							
प्राथमिकता का आधार		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1.	व्यक्तिगत पारिवारिक सम्बन्ध के आधार पर	8	4.4	3	1.4	11	2.8
2.	राजनैतिक दल की कार्यशैली	153	83.6	202	93.1	355	88.8
3.	शीर्ष नेता	3	1.6	7	3.2	10	2.4
4.	जातिगत व सामुदायिक आधार पर	19	10.4	5	3.2	24	6.0
	योग	183	100.0	217	100.0	400	100.0

X^2=16.03df=p<0.001

सारणी 7 में यह दर्शाया गया है कि राजनीतिक दलों, पार्टियों तथा नेताओं को किस आधार पर प्राथमिकता देती है जिसमें यह पाया गया कि 8 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर प्राथमिकता देती है। 2.4 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के आधार पर प्राथमिकता देती है। 6.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ जातिगत एवं सामुदायिक आधार पर प्राथमिकता देती हैं तथा सर्वाधिक 88.8 प्रतिशत उत्तरदात्रिया राजनैतिक दलों की कार्यशैली के आधार पर प्राथमिकता देती हैं। जिसमें कुल ग्रामीण उत्तरदात्रियों में से 93.1 प्रतिशत उत्तरदात्रियां ग्रामीण हैं तथा कुल चयनित नगरीय उत्तरदात्रियों में से 83.6 प्रतिशत उत्तरदात्रियां नगरीय हैं। वर्तमान दौर की मतदात्रियां वह मतदात्रियां नहीं है कि जो किसी के कहे अनुसार अपना मतदान करें अथवा प्रत्याशी चुनें वह राजनीतिक हवा को स्वयं भाँपनें लगी हैं। अपनी इच्छानुसार मतदान करने लगी हैं। आज एक मात्र कार्यशैली ही ऐसी है जो उन्हें प्रभावित कर सकती है और किसी लालच या बहलाव में कम से कम महिला मतदात्रियां तो नहीं आ सकती है। वे कार्यकुशल प्रत्याशी का ही चुनाव करती हैं। परंतु कार्यशैली के आधार पर प्राथमिकता देने वाली मतदात्रियां अधिक है।

सारणी 8: राजनीतिक दलों द्वारा राष्ट्रीय हित हेतु अधिक सचेत होने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों के मूल नगरीय तथा ग्रामीण के आधार उनके विचारों का वर्गीकरण

स्थायी निवास							
राष्ट्रीय हितों हेतु सचेत रहने के प्रति विचार		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1.	हाँ	14	77.7	98	45.2	112	28.0
2.	कभी–कभी	3	1.6	9	4.1	12	3.0
3.	कभी नहीं	166	90.7	110	50.7	276	69.0
	योग	183	100.0	217	100.0	400	100.0

सारणी 8 में यह दर्शाया गया है कि राजनैतिक दल राष्ट्रीय हितों के प्रति सचेत होते हैं या नहीं इस बारे में जानने पर पाया गया कि कुल चयनित उत्तरदात्रियों में से 28.0 प्रतिशत का कहना है कि राष्ट्रीय हितों के प्रति सचेत होते हैं, 3.0 प्रतिशत का कहना है कि कभी–कभी सचेत होते हैं. तथा अधिकतम 69.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का है कि राष्ट्रीय हितों के लिए कभी सचेत नहीं होते हैं। राष्ट्रीय दलों के प्रति महिलाओं की राय नें उन्हें चेताया है। जो परिणाम है वह राजनीतिक दलों की चिंता को बढ़ाने वाला है। वे चुनाव के समय केवल वोट प्राप्त करने हेतु ही जनता व देश की बात करते हैं, उसके बाद वे केवल अपनी स्वार्थ की प्रतिपूर्ति ही करते हैं। न राष्ट्र के प्रति और न ही जनता के प्रति सचेत होते हैं। अपने प्रति हमेशा सचेत जरूर रहते हैं।

सारणी 9: भ्रष्टाचार पर सरकार की प्रक्रिया के सम्बन्ध में उत्तरदात्रियों के स्थायी निवास स्थान शैक्षणिक स्तर धर्म व जाति वर्ग समूहानुसार उनके विचारों का वर्गीकरण

भ्रष्टाचार पर सरकार की प्रतिक्रिया							
स्थायी निवास		भ्रष्टाचार पर कोई ध्यान नहीं है		भ्रष्टाचार समाप्त करने हेतु ठोस कदम उठाये जा रहे हैं।		योग	
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	नगरीय	183	75.4	45	24.6	183	100.0
	ग्रामीण	137	63.1	80	36.9	217	100.0
	योग	275	68.8	125	31.2	400	100.0
$X^2=6.96, df=1, P< 0.01$							
शैक्षणिक स्तर		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	अशिक्षित	128	66.3	65	33.7	193	100.0
2	प्राथमिक से हाईस्कूल	93	72.1	36	27.9	129	100.0
3	≥हाईस्कूल	54	69.2	24	30.8	78	100.0
$X^2=2.21, df=2, P< 0.05$							
	धर्म	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	हिन्दू	226	68.3	105	31.7	331	100.0
2	मुस्लिम	49	71.0	20	29.0	69	100.0
$X^2=0.20, df=1, P< 0.05$							
जाति वर्ग समूह		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	अनुसूचित जाति / जन जाति	75	80.6	18	19.4	93	100.0
2	पिछड़ा वर्ग	102	60.7	66	39.3	168	100.0
3	सामान्य वर्ग	49	70.0	21	30.0	70	100.0
	योग	226	68.3	105	31.7	331	100.0
$X^2=11.10, df=1, P< 0.01$							

उपर्युक्त सारणी में यह दर्शाया गया है कि 75.4 प्रतिशत नगरीय उत्तरदात्रियों ने माना है कि भ्रष्टाचार पर वर्तमान सरकार का कोई ध्यान नहीं है जबकि 24.6 प्रतिशत के अनुसार भ्रष्टाचार पर वर्तमान सरकार का कोई ध्यान नहीं है रहे हैं एवं 63.1 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदात्रियों का कहना है कि भ्रश्टाचार पर कोई ध्यान नहीं है जबकि 39.9 प्रतिशत ग्रामीणों का मानना है कि ठोस कदम उठाये जा रहे है।

शैक्षिक स्तर के आधार पर पाया गया कि 66.3 प्रतिशत अशिक्षित, 72.1 प्रतिशत प्राथमिक से हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त, 69.2 प्रतिशत इससे अधिक शिक्षा प्राप्त उत्तरदात्रियों ने यह माना है कि भ्रष्टाचार पर कोई ध्यान नहीं हैं, जबकि 33.7 प्रतिशत अशिक्षित, 27.9 प्रतिशत प्राथमिक से हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त, 30.8 प्रतिशत इससे अधिक तक की शिक्षा प्राप्त उत्तरदात्रियों ने यह बताया कि भ्रष्टाचार पर ठोस कदम उठाये जा रहे हैं।

धर्म के अनुसार 68.3 प्रतिशत हिन्दू एवं 71.0 प्रतिशत मुस्लिम उत्तरदात्रियों ने यह बताया कि भ्रष्टाचार पर कोई ध्यान नहीं है, 31.7 प्रतिशत हिन्दू तथा व 29.0 प्रतिशत के अनुसार सरकार द्वारा भ्रष्टाचार पर ठोस कदम उठाये जा रहे हैं, जिन उत्तरदात्रियों ने भ्रष्टाचार पर सरकार के ठोस कदम उठाये जाने के बारे में बताया है उनमें से 19.4 प्रतिशत अनुसूचित जाति/जन जाति 39.3 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग एवं 30.0 प्रतिशत सामान्य वर्ग के हैं।

सारणी 10: पुरुष वर्ग द्वारा महिलाओं के विकास में अवरोध बनने के विभिन्न कारणों के आधार पर नगर तथा ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

अवरोध बनने के करण		स्थायी निवास					
		नगरीय		ग्रामीण		योग	
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1.	राजनीति के क्षेत्र में पुरूष वर्ग का वर्चस्व	146	89.6	192	95.0	388	92.6
2.	महिलाओं को कम आँकने की प्रवृत्ति	17	10.4	10	5.0	27	7.4
	योग	163	100.0	202	100.0	365	100.0

X^2=3.95 df=1, P< 0.05

सारणी 9 में महिलाओं के विकास में पुरुष के बाधक बनने के कारणों को दर्शाया गया है, जिसके पश्चात यह पाया गया कि 92.6 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार पुरुष वर्ग इसलिए महिलाओं के विकास में बाधक बनते हैं क्योंकि राजनीति के क्षेत्र में पुरुष वर्ग अपना ही वर्चस्व बनाये रखना चाहते हैं, जिनमें से 89.6 प्रतिशत नगरीय तथा 95.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ग्रामीण क्षेत्र की हैं तथा 74 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार पुरुष वर्ग महिलाओं के विकास में इसलिए बाधक है क्योंकि उनकी महिलाओं को कम आँकने की प्रवृत्ति होती हैं, जिनमें से 10.4 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ नगरीय एंव 5.0 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ ग्रामीण क्षेत्र की है।यह भी उदासीनता का एक मजबूत कारण है।

सारणी 11: उत्तरदात्रियों के स्थायी निवास, शैक्षणिक स्तर, धर्म एवं जाति वर्ग समूहानुसार सरकार द्वारा किसी विशेष वर्ग हेतु किये जा रहे प्रयासों के प्रति उनके विचारों का वर्गीकरण

किसी वर्ग विशेष हेतु अत्यधिक प्रयास करना							
स्थायी निवास		हाँ		नहीं		योग	
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	नगरीय	102	55.7	81	44.3	183	100.0
2	ग्रामीण	100	46.1	117	53.9	217	100.0
	योग	202	50.5	198	49.5	400	100.0
X^2=3.98, df=1, P< 0.05							
शैक्षणिक स्तर							
		सं.	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	अशिक्षित	96	46.7	97	50.3	193	100.0
2	प्राथमिक से हाईस्कूल	64	49.6	65	80.4	129	100.0
3	हाईस्कूल	42	53.8	36	46.2	78	100.0
X^2=0.44, df=2, P< 0.05							

धर्म							
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	हिन्दू	152	45.9	179	54.1	331	100.0
2	मुस्लिम	50	72.5	19	27.5	69	100.0

X^2=16.09, df=1, P< 0.001

जाति वर्ग समूह							
		सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत	सं.	प्रतिशत
1	अनुसूचित जाति / जन जाति	82	88.2	11	11.8	93	100.0
2	पिछड़ा वर्ग	56	33.3	112	66.7	168	100.0
3	सामान्य वर्ग	14	20.0	56	80.0	70	100.0
	योग	152	45.9	179	54.1	331	100.0

X^2=96.51, df=2, P< 0.001

प्रस्तुत सारणी में 55.7 प्रतिशत नगरीय व 46.1 प्रतिशत ग्रामीणों ने यह बताया कि सरकार किसी विशेष वर्ग के लिए कार्यरत है जबकि 44.3 प्रतिशत नगरीय, 53.9 प्रतिशत ग्रामीणों के अनुसार सरकार किसी विशेष वर्ग के लिए कार्यरत है जिन उत्तरदात्रियों ने यह माना है कि सरकार किसी विशेष वर्ग के लिए कार्यरत है उनमें से 49.7 प्रतिशत अशिक्षित, 49.6 प्रतिशत प्राथमिक से हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त हैं, 53.8 प्रतिशत उससे अधिक शिक्षा प्राप्त हैं, 45.9 प्रतिशत हिन्दू हैं, 72.5 प्रतिशत मुस्लिम हैं, 88.2 प्रतिशत अनुसूचित जाति / जन जाति 33.3 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग, 20.0 प्रतिशत सामान्य वर्ग की हैं जिन उत्तरदात्रियों ने यह काह है कि सरकार किसी विशेष वर्ग के लिए कार्यरत नहीं है उनमें से 50.3 प्रतिशत अशिक्षित, 80.4 प्रतिशत प्राथमिक से हाईसकूल शिक्षा प्राप्त, 46.2 प्रतिशत हाईस्कूल से अधिक तक की शिक्षा प्राप्त हैं, 54.1 प्रतिशत हिन्दू 27.5 प्रतिशत मुस्लिम हैं, 11.8 प्रतिशत अनुसूचित जाति / जन जाति, 66.7 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग 80.0 प्रतिशत सामान्य वर्ग की उत्तरादत्रियाँ हैं।

साराशं

भारत में महिलाओं, पुरूषों वृद्धों के मतदान व्यवहार में अंतर पाया जाता है उनके अंदाज का पता लगााना कठिन है। भारतीय मतदाता जागरूक भी है परिपक्व भी इनके बारे में आम धारणा है कि निरक्षरता, निर्धनता तथा अन्य कई बातों के कारण वे अपने मताधिकार का उचित प्रयोग नहीं कर पाते हैं।यह भ्रममूलक धारणा है जब भी स्पष्ट निर्णय लेने के अवसर आए तो मतदाताओं ने जागृति का परिचय दिया है डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि मैं वयस्क मताधिकार को स्वीकार करने वालों से भयभीत नहीं हूँ, मैं राष्ट्र के लोगों को जानता हूँ, मेंरी राय में हमारे देश के लोगों में विवक एंव सामान्य बुद्धि है, उनकी एक संस्कृति भी है, जिसे मिथ्या, सभ्यता में विश्वास रखने वाले शायद न समझ सकें, पर ठोस है। उनमें वह क्षमता भी है, जिससे वे अपने देश के हितों में, यदि उन्हें समझा दिया जाए तो रूचि ले सकते हैं। यहाँ के मतदाता लोकतंत्र के प्रति गहरी आस्था रखते हैं। यही कारण है कि जब–जब सत्तारूढ़ दल ने लोकतंत्र पर आघात करने का प्रयास किया है, मतदाताओं ने उसका भयंकर प्रतिकार किया है। यहाँ के मतदाता मध्यम मार्गी दलों को प्रथमिकता देते हैं। भारतीय मतदाता धर्म निरपेक्षता के समर्थक है। भारतीय मतदाता के व्यवहार में एकरूपता नहीं पायी जाती है। वे जाति, धर्म, क्षेत्रीयता, भाषा, राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों एवं नीतियों को ध्यान में रखते हुए समय–समय पर अलग–अलग देते हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के अनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि 69.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का मानना है कि राजनीति में गिरावट आई है। पहले सहयोग, समर्पण के भाव थे, परंतु आज स्वार्थ सिद्धि ही देखने को मिलती है राजनीति के उद्देश्यों से भटकने के कारण राजनीति दशा में कोई सुधार नहीं है पहले विरोध था तो व वह केवल विचारधाराओं परन्तु आज, सत्ता की आकांक्षा में प्रत्याशी कहाँ तक चले जाएंगे इसकी कोई हद नहीं है। अधिकांश ग्रामीण एवं शहरी महिला उत्तरदात्रियों का कहना है कि, यह सरकार किसी विशेष वर्ग के लिए, उच्च

वर्ग के लिए काम करती है देश विकास के रास्ते पर भले ही आगे बढ़ा हो परंतु गरीबी दूर करने में पूरी तरह से नाकाम है। शिक्षा की दशा पूरी तरह से बर्बाद हो गई है। चुनाव से पहले राजनेताओं के व्यवहार व चुनाव पश्चात व्यवहार में जमीन आसमान का अंतर हो जाता है। वे उसी जनता को भूल जाते है जिनका वोट पाकर विजयी होते हैं उन्हीं की नहीं सुनते, अपने ही भण्डार भरते हैं। मनमानी करते हैं जिससे गहरी उदासीनता व अरूचि व्याप्त है।

सुझाव – (Suggestion)

- छोटे–2 स्तर पर राजनैतिक जागरूकता कार्यक्रम एवं अभियान चलाने की आवश्यकता है।
- महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है ताकि वे केवल अपनी आवश्यकता जरूरत से उपर उठकर देशहित के बारे में भी सोच सकें, नजरिया बदल सके।
- प्रत्याशियों को जमीनी स्तर पर काम करने की आवश्यकता है वे अपना कार्य करें जिसके लिए वे चुने गये हैं ईमानदारी, जिम्मेदारी का आह्वान ही इस शोध का सुझाव है।
- जिस कार प्रत्याशी वोट मागने के लिए चुनाव के समय प्रतिव्यक्ति में रूचि लेता है, उनके पास तक जाता है। चाहे व अनजान ही क्यो न हो, उसे भलीभाँति जानते हों या न जानते है, ठीक उसी प्रकार चुनाव जीतने के बाद भी वही व्यवहार अपनाना होगा।
- महिलाओं में जागरूकता लाने की आवश्यकता है जिससे वे कोई भी कार्य या सवालों के जबाव स्वयं दे सकें ना कि पति से पूछकर ।
- शिक्षित व बुद्धजीवी वर्ग को जागने की आवश्यकता है। पुरानी पीढ़ी से चली आ रही रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था तथा पुरुष प्रधानवादी मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता है।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर होने के लिए शिक्षा एवं जागरुकता की आवश्यकता है।
- जनतंत्र की नींव मताधिकार पर रखी जाती है कोई भी दौर हो ब्यक्ति कहीं भी रहे किंतु मतदान में उसे हर हाल में भाग लेना चाहिए

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शास्त्री त्रिलोचन (चेयरसमैन एडी आर व प्रोफेसर आई.आई.एम. बेगलुरू दैनिक जागरण)
2. योजना, जुलाई, 2014, संख्या, 344.
3. सिंह सुमन, पंचायत चुनाव में जनसहभागिता 2011 पृष्ठ संख्या 23.
4. श्रवनतदंस व मिकनबंजपवद अवसनउमए 1.पेनमए 2 श्रनसलए 2013 चंहम दव.6ण
5. दैनिक जागरण 12 फरवरी 2017, पृष्ठ संख्या, 11–12.
6. लोकतन्त्र की चुनौतियाँ, पृष्ठ संख्या –102.
7. गुप्त चन्द्रकान्त, लोकसभा में विपक्ष की भूमिका, पृष्ठ संख्या–35–6.
8. योजना जुलाई, 2014 पृष्ठ संख्या, 4–5–6.
9. श्रनतदंस व मिकनबंजपवद अवसनउम.1ए पेनउम 2 श्रनसलए 2013 चंहम दव.6ण
10. रंजन राजीव लोकसभा चुनाव एवं राजनीति ज्ञान गंगा प्रकाशन प्रथम संस्करण वर्ष–2000.
11. विकास भवन निर्वाचन विभाग (प्रथम तल)
12. श्रीमती शर्मा सन्तोष लोकसभा मध्यावधी चुनाव वे राजनीतिक, विशिष्ट वर्ग का दृष्टिकोण, प्रथम संस्करण–1983, पृष्ठ संख्या–1,4–10, 19,33–40,4 71–78, 80,81,96,109,111,114.
13. माथुर एल.पी., भारत की महिला स्वतन्त्रता सेनानी, डा.एल. सुखडिया विश्व संख्या 58–61, 143ण
14. शरण परमात्मा, प्राचीन भारत के राजनीतिक विचारक एवं संस्थाएँ मीनाक्षी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–293.

❖◆❖